

---

Harikrita Shiva Stuti

हरिकृता शिवस्तुतिः

Document Information

---

Text title : Harikrita Shiva Stuti

File name : harikRRitAshivastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | shivAkhyah chaturthAMshaH | adhyAyaH 31 | 11-22||

Latest update : August 20, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 20, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

हरिकृता शिवस्तुतिः



भव भीम पुरस्मरान्धकारे भजतां सर्वफलप्रदोऽसि शम्भो ।  
तव शङ्कर किङ्करोऽस्म्यहं भव भावानुभवप्रभाव मूर्ते ॥ ११ ॥

सुरवर्गनिखर्ववेदवादैः विधिगीतैश्चतुराननैरपीड्यम् ।  
पुरगर्वादिहरान्धकान्तकारे शरणं मे भव तारणाय शम्भो ॥ १२ ॥

श्रुतिशेखरवाक्यजातपूज्ये भगवंस्त्वच्चरणाम्बुजद्वये ।  
नयनामलपद्मसङ्गमे पदपद्मे भजतां न जन्ममृत्यू ॥ १३ ॥

अकुण्ठदयया विभो तव सुनीलकण्ठाधुना  
अकुण्ठितसुचक्रधृक्प्रसभमाजिमध्यं गतः ।  
सुरेन्द्रदितिजोद्भवं रणकठोर जेतास्म्यहं  
पिठारजगतीभवं भव भवामि वैकुण्ठपः ॥ १४ ॥

तव वामभवाङ्गसम्भवोऽस्म्यहमीशान तवाद्य दक्षभागः ।  
तव भालतलाद्भवूव रुद्रो जगतां भवनाशनस्थितौ स्वः ॥ १५ ॥

मम नाभिपयोजसम्भवो विधिभालोद्भव एष एव रुद्रः ।  
वयमुद्भवने स्थितौ च नाशे विनियुक्ताः पुरहन्त्वयाऽत्र कल्पे ॥ १६ ॥

त्वामीशं श्रुतिभिर्विमृग्यमानं मोहान्धाः शिवमेकमेवमाद्यम् ।  
मम मायामयपाशबद्धबुद्ध्या जगतां मां करणं तथाहुरन्ये ॥ १७ ॥

भव भर्ग महेश देव शम्भो शशिधामद्युतिशोभितोत्तमाङ्ग ।  
करुणारससागराव शम्भो भुवनेशान नतोऽस्मि ते पदाब्जे ॥ १८ ॥

करकलितकरालशूल बालाविधृताकृतिकालकाल-  
भालानल नीलामलगलगरलोत्थिताधिकीला ।  
दलितान्तक लोकदेह लोलालकतूलातयित गाङ्गवारि  
मौला मलव्यालोरु महाङ्गजातलीला (१) ॥ १९ ॥

शशितरणिहुताशोत्फुल्लभालाब्जनेत्रं

दिनमणि किरणोद्यच्चक्रधामप्रदं मे ।

रणरणितसुरादिवृन्दबन्ध द्विषदितिजासुहरं हरं प्रपद्ये ॥ २० ॥

अलमलमनुवेलं कालकालं सलीलं जगति कलितकालं व्यालमालं सशूलम् ।

बलिबलिबलिनन्दनार्च्यपादं मुनिबालावनतं शिवं भजे त्वाम् ॥ २१ ॥

अङ्गज भङ्ग तुरङ्ग रथाङ्ग भुजङ्ग महाम्बरसङ्ग

शशाङ्ग (शताङ्ग) विहङ्ग पतङ्ग निषङ्ग कुरङ्गधरोक्षक सङ्ग

परिपाहि विभो सुदृशाऽङ्ग दृशाङ्गमहोरु महाङ्गस्फुलिङ्ग ॥ २२ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते शिवाख्ये हरिकृता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । शिवाख्यः चतुर्थांशः । अध्यायः ३१ । ११-२२ ॥

- .. shrIshivarahasyam . shivAkhyah chaturthAMshaH . adhyAyaH 31 . 11-22..

Notes: Viṣṇu विष्णु (Hari हरि) worships Śiva शिव in Tejini forest तेजिनिविपिन with a thousand lotus flowers - one each for one of the thousand names of Śiva शिव. When one lotus apparently goes missing, Hari हरि offers His eye that is akin to a lotus. Pleased with His intense devotion, Śiva शिव grants Him the Sudarśana Cakra sudarshana chakraand revives His eye as well.

Proofread by Ruma Dewan

---



*Harikrita Shiva Stuti*

pdf was typeset on August 20, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

